सार्वजनिक संसाधन

इमेन्युअल बॉन

हिमाचल प्रदेश में किए दो अध्ययनों के ज़रिए इस आलेख में तीन सार्वजनिक संसाधनों - सामुदायिक वन, चरागाह व गुरुत्व प्रवाह सिंचाई तंत्र (खुल) के प्रबंधन की विवेचना की गई है।

हिमाचल प्रदेश का सिरमोर ज़िला हिमालय की पश्चिमी पर्वत श्रेणियों में स्थित है। पहाड़ी भूभाग वाले इस ज़िले में सीढ़ीदार खेती खड़ी ढलानों पर होती है। यहां मिश्रित खेती आजीविका का प्रमुख साधन है। लोग अपनी दैनंदिन कामों में निजी, राजकीय एवं सार्वजनिक स्वामित्व वाले संसाधनों का संयुक्त रूप से उपयोग करते हैं। इस अध्ययन में सामुदायिक वन (मुस्तरका), चरागाह (घासनी) व गुरुत्व प्रवाह सिंचाई तंत्र (खुल) को तीन प्रमुख सार्वजनिक संसाधनों के रूप में लिया गया है। सामाजिक-आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय कानूनों एवं सार्वजनिक संसाधनों जैसे कारकों के कारण प्राकृतिक संसाधनों (खास तौर पर सार्वजनिक संसाधनों) के प्रबंधन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं।

हमारा विचार है कि मध्य पर्वतीय अर्थव्यवस्था में प्राकृतिक संसाधनों के स्वामित्व से सम्बंधित वर्तमान व्यवस्था मिश्रित कृषि व्यवस्था के अनुरूप नहीं है। वास्तव में सार्वजनिक क्षेत्र के अनुचित हस्तक्षेप के कारण साझे चरागाहों का विभाजन हुआ है। असंवेदनशील सार्वजनिक नियंत्रण की प्रतिक्रिया स्वरूप लोगों ने सार्वजनिक उपयोग के संसाधनों पर नियंत्रण की मांग की है। दरअसल संसाधनों के उपयोग से सम्बंधित वर्तमान कानूनी तथा परंपरागत दोनों दंड व्यवस्थाओं से लोगों के बच निकलने की भारी आशंका के चलते प्रचलित नियम अव्यावहारिक हो जाते हैं। जबकि दूसरी ओर परम्परागत नियम और सामुदायिक नियंत्रण प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग व दुरुपयोग की सामाजिक सीमाएं निर्धारित कर सकते हैं। हमने देखा है कि कुछ परिस्थितियों में सामूहिक कार्यवाही निजीकरण व राष्ट्रीयकरण का बेहतर विकल्प बन सकती है।

पर्वतीय क्षेत्रों में सीढ़ीदार खेतों को ध्यान में रखकर लघु सिंचाई योजनाएं बनाई जाती हैं